Course: B.A. Geography, Part II (Hons.)

Paper Code: IV (A)

Paper Name: Economic and Resource Geography

Topic: Subsistence Agriculture

College: R.K.D. College, Patliputra University

Presenter: Dr. Nidhi Sinha

परिचय

व्यापक अर्थों में कृषि फसलों और पशुओं को पालने की गतिविधि को संदर्भित करती है

यह दुनिया के सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है

यह आर्थिक गतिविधि का प्राथमिक रूप है, इसमें न केवल खेती शामिल है, बल्कि पशुपालन, डेयरी, वानिकी, लकड़ी, सिंचाई और अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं।

कृषि का अभ्यास शारीरिक और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कई संयोजनों के तहत किया जाता है, जो विभिन्न प्रकार की कृषि प्रणालियों को जन्म देता है।

से प्रभावित है:

1. तापमान
2. नमी की स्थिति
3. प्राकृतिक भूगोल
4. मिट्टी का पात्र
5. जनसंख्या घनत्व
6. उपभोग स्वरूप
7. प्रौद्योगिकी

जीविका कृषि

वह है जिसमें किसान और किसान के परिवार को बनाए रखने के लिए लगभग सभी फसलों या पशुधन का उपयोग किया जाता है, इसलिए स्थानीय स्तर पर उगाए जाने वाले उत्पादों की। फार्म आउटपुट मूल रूप से अस्तित्व और स्थानीय आवश्यकता के लिए है, इस प्रकार कोई या बहुत कम अधिशेष नहीं है। अधिशेष स्थानीय बाजार में बेचा जा रहा है या कारोबार किया जा रहा है।

इसे निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

1. आदिम निर्वाह कृषि / शिफ्टिंग खेती
2. गहन निर्वाह कृषि
    a. गहन निर्वाह, चावल प्रधान
    b. गहन निर्वाह, चावल के बिना

I. आदिम सब्सिडी कृषि / स्थानांतरण खेती

- यह उष्णकटिबंधीय वर्षावन जलवायु के क्षेत्रों में खराब मिट्टी के उपयोग का एक आदिम रूप है।
- प्रजनन की तलाश में हर कुछ वर्षों में खेतों को स्थानांतरित किया जाता है
- आग और हाथ के उपकरण का उपयोग जमीन को साफ करने के लिए किया जाता है क्योंकि इस शिफ्टिंग खेती को बर्न- और -शेष प्रकार की खेती के रूप में भी जाना जाता है।
- निर्वाह प्रकार की खेती, अनाज और मूल फसलें होना महत्वपूर्ण हैं
- कृषि का यह रूप भूमि संसाधन के लिए हानिकारक है और इससे मिट्टी का क्षरण होता है और भूमि का क्षरण होता है
- यह उष्णकटिबंधीय, विशेष रूप से अफ्रीका, दक्षिण और मध्य अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया में कई जनजातियों द्वारा व्यापक रूप से प्रचलित है

Areas of Primitive Subsistence

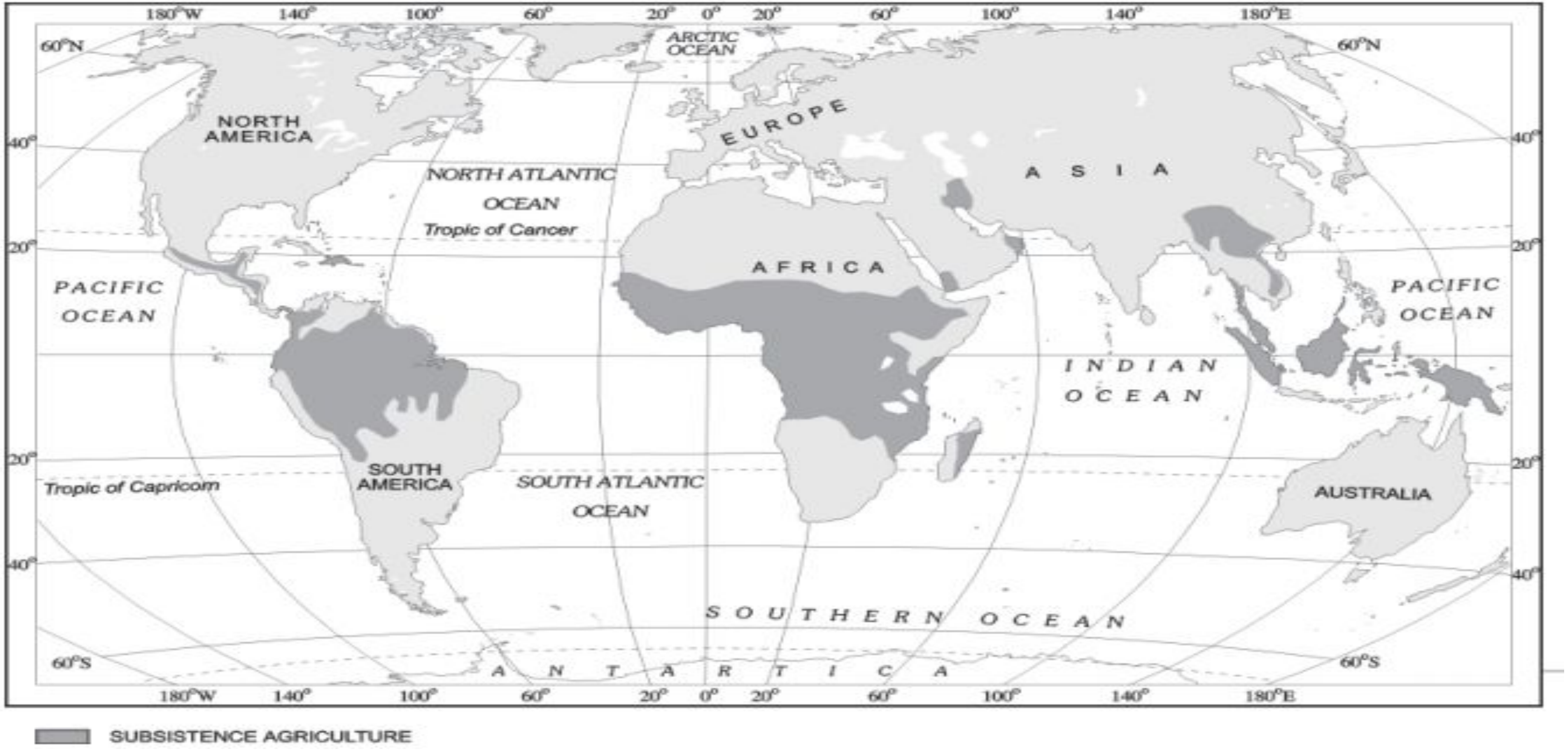

Source: Fundamentals of Human Geography, NCERT Textbook for Class XII

II.गहन निर्वाह कृषि

इस प्रकार की कृषि बड़े पैमाने पर मानसून एशिया के घनी आबादी वाले क्षेत्रों में पाई जाती है। दो प्रकार के गहन निर्वाह कृषि हैं:

1. गहन निर्वाह, चावल प्रधान
2. गहन निर्वाह, चावल के बिना

1. गहन निर्वाह, चावल प्रधान

- इस प्रकार की कृषि में उष्ण और आर्द्र उष्णकटिबंधीय जलवायु वाले क्षेत्रों में प्रचलित चावल की फसल का प्रभुत्व है।
- जनसंख्या के उच्च घनत्व के कारण भूमि की धारण बहुत कम है।
- भूमि के गहन उपयोग के लिए अग्रणी पारिवारिक श्रम की मदद से किसान काम करते हैं।
- मशीनरी का उपयोग सीमित है और अधिकांश कृषि कार्य मैनुअल श्रम द्वारा किए जाते हैं।
- खेत की खाद का उपयोग मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने के लिए किया जाता है
- प्रति इकाई क्षेत्र में पैदावार अधिक है लेकिन प्रति श्रम उत्पादकता कम है
- इस प्रकार की खेती के बड़े हिस्से भारत, चीन, बांग्लादेश और दक्षिणी और पूर्वी एशिया के अन्य देशों और नील डेल्टा नदी घाटी और डेल्टा मैदान हैं।

2. गहन निर्वाह, चावल के बिना

- राहत, जलवायु, मिट्टी और अन्य भौगोलिक कारकों में अंतर के कारण, मानसून एशिया के कई हिस्सों में चावल उगाना असंभव है
- यह चावल की खेती के लिए उपयुक्त परिस्थितियों की कमी वाले उच्च घनत्व वाले क्षेत्रों में प्रबल है।
- अपेक्षाकृत कम मात्रा में वर्षा वाले क्षेत्रों में, चावल की खेती नहीं की जाती है और इसका स्थान गेहूँ, जौ, बाजरा, शर्बत, सोयाबीन जैसी कम पानी वाली फसलों द्वारा लिया जाता है।
- भूमि उपयोग की उच्च तीव्रता
- फसलों को उगाने के लिए सिंचाई का उपयोग किया जाता है
- फार्म मशीनीकरण सबसे कम है
- दक्षिण और पूर्वी एशिया और आंतरिक एशिया के क्षेत्र इस प्रकार की खेती के मुख्य क्षेत्र हैं
  - ➔ उत्तरी चीन, मंचूरिया, उत्तर कोरिया और उत्तरी जापान: गेहूं, सोयाबीन, जौ और शर्बत
  - ➔ भारत, भारत का पश्चिमी भाग- गंगा का मैदान: गेहूँ
    - ➔ पश्चिमी और दक्षिणी भारत के शुष्क भाग: बाजरा

Areas of Intensive Subsistence Agriculture

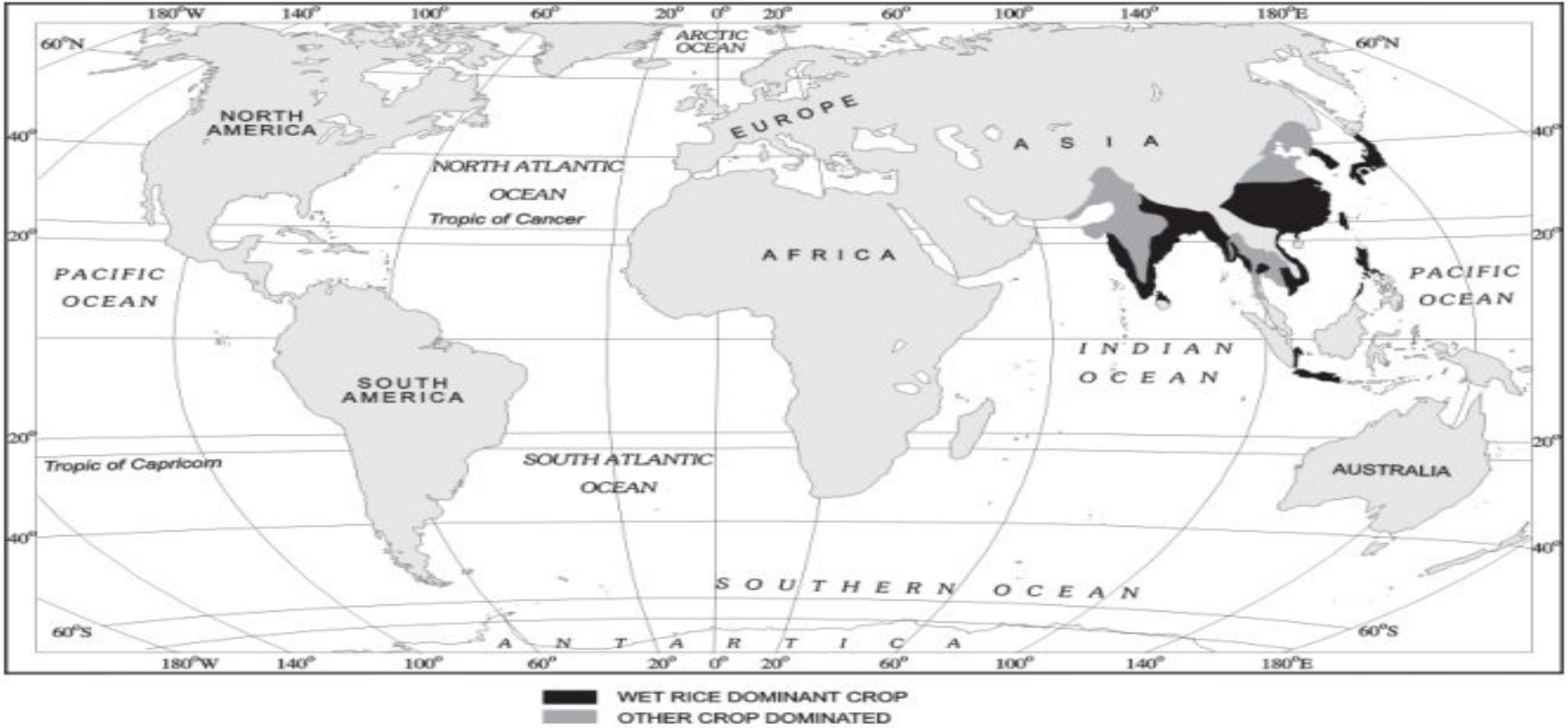

Source: Fundamentals of Human Geography, NCERT Textbook for Class XII